पर चने का टोकरा हरखू के गले में लटक गया। पहले पहल तो बड़ा डर लगता था उसे। चलती गाड़ी में एक डिब्बे से दूसरे डिब्बे में जाते समय वह काँप जाता था। संतुलन बिगड़ जाता था...लेकिन धीरे-धीरे उसे आदत पड गयी।

सुबह वह जबलपुर से गाड़ी में चढ़ता और इटारसी तक पहुँचता है, फिर वहाँ से वापस जबलपुर की गाड़ी में बैठकर शाम तक यहाँ आ जाता है। सुबह-सुबह उसकी माँ चने भट्ठी में भूनकर उसके टोकरे में भर देती है।

यही समय स्कूल का भी होता है। रास्ते में उसे एक-सी वरदी पहने, बस्ता टाँगे बच्चे स्कूल जाते नज़र आते हैं। बड़ा भला लगता है हरखू को। एक-दो पल खड़ा होकर हसरत भरी निगाहों से वह उन्हें देखता है...और फिर चल पड़ता है।

जब बापू ज़िंदा थे, तब वह भी स्कूल जाता था। अब हरखू अपने छोटे भाई के लिए बापू के कर्तव्य को निभा रहा है। उसे स्कूल में डाल दिया है। अब हरखू को यही संतोष है कि वह नहीं तो कम-से-कम उसका भाई तो पढ़ ही रहा है स्कूल में।

'ले लो चने कुरमुरे मसालेदार...' हाँक लगाता हरखू आगे बढ़ गया। दोपहर ढल रही थी। हरखू सोच रहा था—आधी टोकरी चने तो बिक ही चुके हैं, बाकी आधे भी जबलपुर पहुँचने तक खत्म हो जाएँ तो अच्छा है। यह उसकी वापसी यात्रा थी। एक से दूसरे डिब्बे में होता हुआ, वह अब पहले दर्जे वाले डिब्बे में पहुँच गया था। यहाँ अकसर बिक्री कम होती थी।

एक बोगी का दरवाज़ा खुला देख, हरखू अंदर घुसा और उसी तीखी सुरीली आवाज़ में बोला, 'ले लो बाबू चने कुरमुरे।'

'भाग यहाँ से।' सीट पर पसरे एक मोटे सेठ ने उसे दुत्कारा, 'जाने कहाँ-कहाँ से भिखारी घुस आते हैं डिब्बे में।'

'मैं भिखारी नहीं हूँ, चने बेचने वाला हूँ।' हरखू बोला।

हरखू जैसे ही बोगी से बाहर निकलने को हुआ अचानक दरवाज़े में एक लंबे-तगड़े मुच्छैल आदमी को पिस्तौल हाथ में लिए देखकर चौंक पड़ा। मुच्छैल बदमाश तेज़ी से डिब्बे में घुसा और पिस्तौल का निशाना सवारियों पर साधकर कड़े स्वर में बोला, 'जो कुछ जेवर-नकदी है यहाँ मेरे पास रख दो, खबरदार जो किसी ने हिलने की कोशिश की...भेजा उड़ा दूँगा।'

सेठ और बाकी सवारियाँ भय से काँप रही थीं। बदमाश ने पाँव से धक्का देकर दरवाज़ा बंद कर दिया था। गाड़ी अपनी तेज़ गति से भाग रही थी। ऐसे में बाहर आवाज़ भी सुनाई देने की संभावना नहीं थी। हरखू भी सिकुड़ा-सा एक कोने में खड़ा था। सवारियाँ जेब से नकदी निकालकर बर्थ के एक कोने में रखने लगीं।

'जल्दी करो...' बदमाश पिस्तौल लहराकर सेठ से बोला, 'तू अपना ये ब्रीफ़केस मेरे हवाले कर दे...अपनी सेठानी को भी बोल, गहने उतारकर धर दे यहाँ...' हरखू ने देखा सेठ की बगल में बैठी सेठानी गहनों से लदी बैठी है।

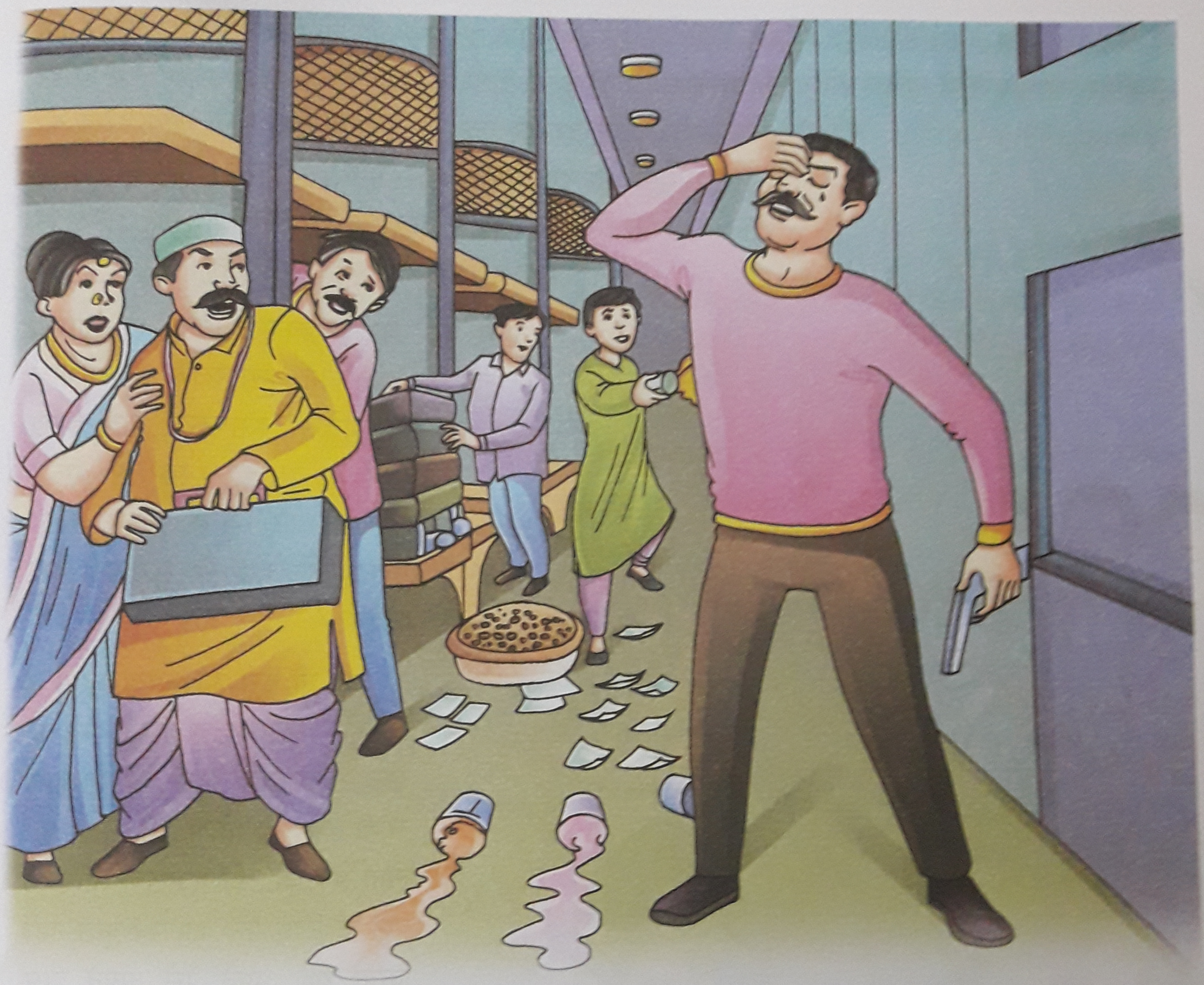

'जल्दी ब्रीफ़केस इधर करो वरना...' बदमाश की धमकी से सेठ के माथे से पसीना चुहचुहा आया। सेठ के काँपते शरीर को देखकर हरखू समझ गया कि ब्रीफ़केस में ज़रूर कोई कीमती चीज़ है या फिर शायद नकदी भरी होगी। भय से सुबकती हुई सेठानी ने भी गहने उतारने शुरू कर दिए थे।

हरखू का दिमाग बिजली की तेज़ी से चल रहा था। अगला स्टेशन पिपरिया अभी दो घंटे से पहले नहीं आएगा। तब तक गाड़ी के रुकने की कोई संभावना नहीं है। सही मौका देखकर अचानक हरखू ने तत्परता से चाट मसाले का डिब्बा बदमाश की आँख की ओर उछाल दिया।

'धायँ...' साथ ही बदमाश की पिस्तौल से गोली छूटने की आवाज़ आई और गोली छत से टकराई। सारा मिर्च-मसाला बदमाश की आँखों में पड़ गया था और अब वह आँख मलता हुआ दर्द से बिलबिला रहा था। हरखू ने मशीन की तेज़ी से बदमाश का पाँव पकड़कर खींचा। बदमाश संतुलन न साध सका और धड़ाम

से नीचे गिर गया। अब कंपार्टमेंट में बैठे सभी मुसाफ़िर उस पर टूट पड़े और उन्होंने उसे बाँध दिया। एक मुसाफ़िर भागकर रेलवे पुलिस को बुलाने चला गया। हरखू के टोकरे के सारे चने डिब्बे में इधर-उधर बिखर गये थे। चाट-मसाला भी दूर-दूर तक छितरा गया था। सभी लोग हरखू की सूझ-बूझ और बहादुरी की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे थे। सेठ हरखू के सिर पर हाथ फेरकर प्यार से बोला, 'अगर आज यह लड़का न होता तो मैं लुट गया होता।'

अगर यह छोटा लड़का न होता, तो आपका नुकसान होता और हम रेलवे पुलिस वाले बदनाम होते...' इंसपेक्टर बाबू हरखू की ओर प्रशंसात्मक स्वर में बोला, 'शाबाश बेटे, तुम्हें ज़रूर रेलवे पुलिस की ओर से पुरस्कार दिया जाएगा।'

'मैं भी इसे सौ रुपये इनाम दे रहा हूँ,' 'सेठ ने जेब से सौ रुपये का नोट निकालकर हरखू को पकड़ाना चाहा तो हरखू बोला, 'मैं भीख नहीं लेता सेठ जी...और आपसे सौ रुपये पाने के लिए मैंने यह सब कुछ नहीं किया था, अपने पैसे अपने पास रखो।'

'वाह। कमाल का बच्चा है।' एक युवक बोला...'तुम्हारा घर कहाँ है?'

'जबलपुर'। हरखू बोला 'बापू नहीं हैं, इसलिए जबलपुर-इटारसी के बीच चने बेचता हूँ। छोटे भाई को स्कूल में पढ़ा रहा हूँ।'

'तुम नहीं पढ़ते क्या?'

'पढ़ने का तो बहुत मन है, पर फिर कमाई कहाँ से होगी? हरखू की बात पर सेठ कुछ देर सोचता रहा,

फिर बोला, तुम्हें मैं फ़ैक्ट्री में काम तो दे नहीं सकता, क्योंकि तुम बच्चे हो, तुम शाम को मेरी किताबों की दुकान में जिल्द बाँधने का काम करना। दो-ढाई घंटे में ही चने बेचने से ज़्यादा कमा लोगे। सुबह स्कूल जाया करना। मेरा एक स्कूल भी है, जबलपुर में तुम्हारा दाखिला हो जाएगा। फ़ीस भी माफ़ करवा दूँगा। किताबें-कॉपियाँ स्कूल के फंड से दिलवा दूँगा, ठीक है न...यह तो भीख नहीं है?'

'हाँ' हरखू खुश हो गया।

'यह कार्ड रख लो, इसमें मेरा नाम-पता है। कल सुबह आकर मिल लेना।' सेठ ने हरखू को कार्ड थमा दिया। कार्ड हाथ में थामे हरखू सोच में डूबा हुआ था। अपनी कल्पना में वह सफ़ेद वरदी पहने, बस्ता टाँगे स्कूल जा रहा था।

—कमला चमोला

हमने सीखा— • आत्मनिर्भरता • आत्म-सम्मान • निर्णय लेने की क्षमता • श्रम का महत्त्व • ईमानदारी • कुछ कर गुज़रने की क्षमता

अभ्यास

शब्दार्थ

तत्परता	—	जल्दी	असमय	—	उचित समय न होना
वरदी	—	यूनिफ़ॉर्म	हसरत	—	इच्छा
बर्थ	—	ट्रेन की सीट	बिलबिलाना	—	तड़पना
छितराना	—	फैल जाना	प्रशंसात्मक	—	तारीफ़ के लिए

पाठ बोध

1. मौखिक

Speaking Skills

क. हरखू चने बेचते समय क्या कहकर चने बेचता था?

ख. हरखू किस ट्रेन में चने बेचा करता था?

ग. अंदर घुसने पर सेठ ने हरखू को क्यों दुत्कारा? लोग ऐसी चीज़ें बेचने वाले बच्चों को क्यों डाँटते हैं?

घ. बोगी से निकलते हुए हरखू ने क्या देखा?

ङ. बदमाश ने डिब्बे में घुसकर क्या कहा?

3

वक्त की सूझ

पठन से पूर्व...

सही समय पर जागरूक व्यक्ति के कार्य उसे सफलता की ओर अग्रसर करते हैं। किसी विपत्ति से घबराकर भागने और लक्ष्य को ध्यान में रखकर चलने में अंतर होता है, इसलिए रेल में चने बेचने वाले लड़के हरखू ने सबको मुसीबत से बचा लिया, अन्यथा लोग घबराकर लुट ही जाते।

'ले लो चने कुरमुरे मसालेदार...जो भी खाए, माँगे बार-बार...' तीखी सुरीली आवाज़ में हरखू पुकार लगा रहा था। गले में डोरी के सहारे चने का भरा टोकरा लटकाए वह एक कंपार्टमेंट से दूसरे कंपार्टमेंट में जा रहा था,

'ले लो बाबू... सफ़र की थकान दूर हो जाएगी...ले लो चने कुरमुरे मसालेदार...'

तेरह-चौदह वर्ष का हरखू इसी तरह सुरीली आवाज़ में अपने चनों का गुणगान करता जा रहा था। कहीं-कहीं कोई मुसाफ़िर उसे रोककर एक रुपये के चने माँगता, तो हरखू उसे तत्परता से, किनारे से एक चौकोर कागज़ निकाल कर चने उसमें डालता, डिब्बे में भरी चटपटी मसालेदार बुकनी छिड़कता और ऊपर से नींबू की आठ-दस बूँदें टपका देता...

दस बरस का था हरखू जब उसने यह धंधा शुरू किया था, बापू के मरने के बाद माँ और छोटे भाई की ज़िम्मेदारी असमय ही उसके छोटे-नाज़ुक कंधों पर पड़ी थी, उसका बापू भी इसी तरह इटारसी जबलपुर के बीच की लाइन पर रेल में चने बेचा करता था। बापू के मरने